पद्म सचदेव साहित्य अकादमी की महत्तर सदस्यता से सम्मानित

नई दिल्ली, 12 जून (ब्यूरो): साहित्य अकादमी ने अपने सभागार में आज प्रख्यात साहित्यकार पद्मा सचदेव को अपना सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता से विभूषित किया। सम्मान स्वरूप उन्हें एक शॉल और ताम्र फलक साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने दिया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि पद्मा सचदेव उत्कृष्ट कवयित्री तो हैं ही वे एक श्रेष्ठ अनुवादक भी है। उनका अपनी मातृभाषा से प्रेम और उसको आगे बढ़ाने का जुनून काबिलेतारीफ है। इस मौके पर अकादमी सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि भारत साहित्य और लेखन की भूमि है। इसका सबसे महत्वपूर्ण आयाम देश की महिला रचनाकारों का योगदान है।

पद्मा सचदेव को सम्मानित करते चंद्रशेखर कंबार।

नवोदय टाइम्स
Thu, 13 June 2019
epaper.navodayatimes.

Hindustan | 13.6.19 | P. 2

पद्मा सचदेव को साहित्य अकादमी का सम्मान

नई दिल्ली | वरिष्ठ संवाददाता

साहित्य अकादमी ने बुधवार को डोगरी व हिंदी की प्रख्यात लेखिका पद्मा सचदेव को अपने सर्वोच्च महत्तर सम्मान से सम्मानित किया है। अपने सभागार में आयोजित एक कार्यक्रम में अकादमी के अध्यक्ष चंद्र शेखक कंबार ने पद्मा सचदेवा को सम्मान स्वरूप एक शॉल व ताम्र फल प्रदान किया।

पद्मा सचदेव का जन्म 1940 में जम्मू में हुआ था। उन्होंने सन् 1969 में, अपने पहले कविता-संग्रह मेरी कविता मेरे गीत के साथ राष्ट्रीय साहित्यिक परिदृश्य में पर्दापण किया। इसकी भूमिका हिंदी के क़द्दावर कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने लिखी थी।

इस संग्रह को सन् 1971 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उत्तर बैहनी, तैथियां, तवीते चन्नहां, अक्खर कुंड, नेहरियां गलियां (अंधेरी गलियां), लालदियां, सुग्गी, चित्तचेते, अमराई, गोदभरी, बूतूं राजी, अब न बनेगी देहरी, नौशीन, मैं कहती हूं आंखिन देखी, जम्मू जो कभी शहर उनकी प्रमुख रचनाएं हैं।

Rashtriya Sahara
13.6.13 P. 11

पद्मा सचदेव साहित्य अकादमी की फेलो बनी

■ नई दिल्ली (वार्ता)।

हिन्दी और डोगरी की प्रख्यात लेखिका पद्मा सचदेव को बुधवार को साहित्य अकादमी का फेलो बनाकर उन्हें सर्वोच्च सम्मान प्रदान किया गया।

उन्नासी वर्षीय श्रीमती सचदेव को यहाँ साहित्य अकादमी के सभागार में आयोजित एक गरिमापूर्ण समारोह में यह सम्मान प्रदान किया गया। अकादमी के अध्यक्ष एवं मशहूर नाटककार चन्द्रशेखर कम्बार ने श्रीमती सचदेव को एक प्रशस्ति पत्र, एक स्मृति चिह्न, शाल आदि प्रदान कर उन्हें इस सम्मान से नवाजा। अकादमी के सचिव के. श्रीनिवास राव ने प्रशस्ति पत्र का वाचन किया। इसके बाद सम्मानित लेखिका ने अपनी रचना प्रक्रिया और अपने लेखन पर उद्गार व्यक्त किये।

साह अप्रैल 1940 को जम्मू के पुरमंडल में जन्मी श्रीमती सचदेव डोगरी की पहली लेखिका है, जिन्हें यह सम्मान मिला है। हिन्दी की प्रख्यात कवयित्री महादेवी पहली लेखिका थी जिन्हें यह सम्मान (1979) में मिला था। इस सम्मान की शुरुआत 1968 में हुई और पहला सम्मान डॉ राधाकृष्णन को मिला था। श्रीमती सचदेव श्रीमती बालामणि अम्मा, आशापूर्ण देवी, कुर्तुलेन हैदर अमृता प्रीतम, कृष्णा सोबती, अनीता देसाई के बाद यह सम्मान पाने वाली आठवीं महत्पूर्ण लेखिका है। उन्हें 1971 में साहित्य अकादमी सम्मान मिल चुका है। साहित्य अकादमी के फेलो की अधिकतम संख्या 21 रहती है। श्रीमती सोबती के निधन के उपरांत रिक्त स्थान के बाद श्रीमती सचदेव को यह सम्मान मिला।